पाठ :

रुबाइयाँ

(फ़िराक़ गोरखपुरी)

गजल

प्रश्न: शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?

उत्तर: रक्षाबंधन एक मीठा और पवित्र बंधन है। रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं। वास्तव में सावन का संबंध घटा से होता है, घटा का जो संबंध बिजली से है, वही संबंध भाई का बहन से है। शायर यही भाव व्यक्त करना चाहता है, कि वह बंधन पवित्र और बिजली की तरह चमकता रहे।

प्रश्न: खुद का परदा खोलने से क्या आशय है?

उत्तर: खुद का परदा खोलने से आशय है, अपनी कमियों या दोषों को स्वयं ही प्रकट करना। यदि कोई व्यक्ति दूसरे की निंदा करता है, तो वह अपनी स्वयं की ही कमजोरी बता रहा होता है। कवि की बुराई करने वाला अपनी बुराइयों से भी परदा उठाता है।

प्रश्न: किस्मत हमको रो लेवे है हम किस्मत को रो ले हैं — इस पंक्ति में शायर की किस्मत के साथ तना-तनी का रिश्ता अभिव्यक्त हुआ है। चर्चा कीजिए।

उत्तर: ऊपर की पंक्ति को देखकर कहा जा सकता है, कि शायर कभी भाग्यवादी नहीं रहा। वास्तव में किस्मत ने उसका कभी साथ नहीं दिया। वह उसलिए किस्मत पर भरोसा नहीं करता जब कभी भाग्य की बात चलती है, तो वह उसके नाम पर केवल रो देता है।